# हज्ज व उमरह –
# प्रतिष्ठा व प्रतिभा

हज्ज व ज़ियारत के क़ाफिले सुए हरमैन शरीफैन रवां-रवां हैं। पूर्ण जीवन जिस कअ़बे की ओर रुक़ कर के नमाज़ें समापन करते रहे अब वह खुद अपनी आँखों से कअ़बा शरीफ का दीदार करेंगे। जिस नबी करीम रौफ व रहीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम का कलिमा पढते हैं अब इन के उच्च दरबार में उपस्थित होने की कृपा पाएंगें।

मानव का स्वभाव में यह बात प्रवेश है के जब वह किसी बड दरबार में उपस्थित होना चाहता है तो स्नान कर के सम्पूर्ण पवित्र व शुद्ध होता है। उच्च वस्त्र पहनता है तथा फिर शाही दरबार में उपस्थित होता है।

ऐसे ही हाजी लोग बादशाहों के बादशाह अल्लाह तअ़ाला के दरबार में उपस्थित होते हैं तथा इस उच्च दरबार में उपस्थित होने के लिए इन्हें रमज़ान के द्वारा पवित्र व शुद्ध किया गया। प्रथम अ़शरे (पहले 10 दिन) में बन्दों को रहमतों प्रदान की गई, दूसरे अ़शरे में मुक्ति व मोक्ष के द्वारा पापों से पवित्र व शुद्ध किया गया, तीसरे अ़शरे में नरक व जहन्नम से रिहाई का परवाना दिया गया तथा इसे शब खद्र की बरकतों से मालामाल व धनी किया गया।

मोमिन बन्दे ने क़ुरान करीम कि तिलावत और सुना भी। जिस से दिल का ज़ंग दूर हो गया तथा इस का मन रोशन व दीप्तिमान हो गया।

www.Ziaislamic.com

रोज़े की बरकत से नफ्स प्रभावित व मग़लूब हो गया तथा बन्दा तरतीब इसलाम का दर्पण तथा तरावीह व नवाफील के संपादन से शिष्टाटार व सभ्याचार का पैकर बन गया। अ तक वह पापों के मैल से लुत-पुत था। इसे रमज़ान के महीने में अब रहमत व मुक्ति व मग़फिरत के पानी से पवित्र व शुद्ध कर दिया गया।

जब बन्दा सम्पूर्ण पवित्र व शुद्ध हो गया तो अब आज्ञा मिलती है के अल्लाह तआ़ला के दरबार में उपस्थित हो जाओ।

*हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की हज्ज की घोषणा*

जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला हज्ज की कृपा दान कर रहा है, वह अल्लाह के दरबार के सुचरित व चुनिंदा हैं क्यों के जब हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम ने कअ़बा की रचना की तथा लोगों में हज्ज की घोषणा की, अल्लाह की प्रकृति से आवाज धरती व आकाश के बीच गूंज उठी।

जिसे धरती व आकाश में उपलब्ध सारी खलक़त ने सुना, संसार के क्षेत्र से निर्माण अल्लाह का वहाँ उपस्थित होना इस की दलील है, जैसा के मुसतदरक अ़ला सहिहैन में रिवायत हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमायाः जब हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम कअ़बा की रचना से मुक्त हुए तो अल्लाह तआ़ला के दरबार में निवेदन कियाः अल्लाह! मैं निर्माण से मुक्त हो चुका हुं, तो अल्लाह तआ़ला ने आदेश दिया "लोगों में हज्ज की घोषणा करो"।

इन्हों ने विनती कीः अल्लाह! मेरी आवाज़ कैसे पहुंचेगी? आदेश दियाः आवाज देना तुम्हारा काम है और पहुंचाना हमारे जिम्मे है। इन्हों ने निवेदन कियाः पालनहार! मैं किन कलिमात से घोषणा करूँ। अल्लाह ने इरशाद कियाः इस प्रकार करो! "ऐ लोगो! तुम पर हज्ज फर्ज़ किया गया, सम्माननीय व माननीय घर कअ़बतुल्लाह का हज्ज तुम पर फर्ज़ किय गया" तो धरती व आकास के बीच जितने प्राणी थे सब ने आप की आवाज़ सुनी। यही कारण है के तुम देखते हो के हाजी धरती को कोने कोने से लब्बैक-लब्बैक कहते हुए हज्ज के लिए आते हैं।

(अल मुसतदरक अ़ला सहिहैन लिल हाकीम, हदीस संख्याः 3421)

*खलील कि घोषणा पर लब्बैक कहने वाले ही हज्ज के भाग्यवान*

हज़रत इबराहीम अलैहिस सलाम की आवाज़ पर जिन सदस्य ने लब्बैक कहा था वही लोग आज हज्ज की कृपा से आभूषण हो रहे हैं। जैसा के तफसीर दुर्रे मनसूर में हैः-

भाषांतरः- इ़माम इ़ब्न अबु हातिम रहमतुल्लाहि अलैह ने सैयदना अबदुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित आख्यान किए हैः- आप ने फरमायाः जब अल्लाह तअ़ाला ने सैयदना इबराहीम अलैहिस सलाम को आदेश दिया के लोगों में हज्ज की घोषणा करें तो आप अबु खुतबीस नामी एक पर्वत पर चढे तथा अपनी मुबारक अंगुलियों को अपने कानों में रखा, तथा घोषणा कीः "अवश्य अल्लाह तअ़ाला ने तुम पर हज्ज फर्ज़ किया हैतो तुम अपने पालनहार के निमन्त्रण पर लब्बैक कहो!" तो आप की इस घोषणा पर लोगों ने मुरदो पीठों तथा महिलाओं के पेठों से तलबिय पढते हुए इस निमन्त्रण को स्वीकार किया। तथा सब से प्रथम यमन वालों ने आप

के निमन्त्रण पर लब्बेक कहा। तथा इस दिन से क़यामत तक जो जोई हाजी हज्ज करता है तो यह वही भाग्यशाली व सौभाग्य है जिस ने इस समय सैयदना इबराहीम अलैहिस सलाम के आमंत्रण पर लब्बैक कहा था।

(अल दुर्रे मनसूर, फी अल तफसीरुल मनसूर, सुरह अल हज्ज, पः 27)

जो अल्लाह के बन्दे हज्ज का विसाल फर्ज़ संपादन कर रहे हैं वह अल्लाह तआ़ला के दरबार से सुचरित व चुनिंदा हैं। अल्लाह तआ़ला जब इस कृपा से आभूषण कर रहा है तो इन्हें चाहिए के वह हज्ज के मनासिक श्रेष्ठ रूप से सीख लें। तौबा व इस्तेग़फार की कसरत करें, दिल में भय व खौफ की कैफियत में अधिक समावेश करें।

जो हुक़ूक़ वाजिब हैं इन्हें संपादन करें, यदि किसी की दिल दुखाया किया हो तो इन से क्षमा चाहें। हज्ज में विशेष रूप से धीरज व सहनशीलता, शान्ति व धैर्य से काम लें, अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- जो व्यक्ति हज्ज के महीनों में अहराम बाँध कर हज्ज की नीयत कर ले तो ना हज्ज के समय ना तो काम-वासना की बातें हो सकती है और ना अवज्ञा व पाप करें तथा ना ही किसी से झगड़ें।

(सुरह अल बक़रहः 02:197)

हज्ज इसलाम धर्म का एक मान्य स्तम्भ है। जो हर योग्यता रखने वाले सदस्य पर जीवन में एक बार फर्ज़ है। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः- और अल्लाह तआ़ला के लिए लोगों पर कअ़बातुल्लाह का हज्ज फर्ज़ है जो इस तक पहुंचने की सामर्थ्य व योग्य प्राप्त हो।

(सुरह आले इ़मरानः 03:97)

हज्ज अल्लाह तआ़ला की सन्तुष्टी के लिए किया जाए, इस से यात्रा व दिखावा उद्देश्य ना हो। हज्ज इस लिए ना किया जाए के लोग हमें हाजी कहें बल्कि इस नीयत से किया जाए के अल्लाह तआ़ला तथा इस के हबीब सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम सन्तुष्ट हो जाएं। क्यों के इ़बादात के भीतर नीयत को रुह व आत्मा का दर्जा दिया गया है।

जो भाग्यशाली लोग केवल अल्लाह के लिए नीयत के साथ हज्ज संपादन करते हैं इन के लिए सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने विशाल बशारत प्रदान फरमाई जैसा के सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु अल हकीम सियार रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः- मैं ने हज़रत अबु हाज़िम रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से सुना के वह फरमाते हैः- मैं ने हज़रत अबु हुरैरह रि से सुना इन्हों ने फरमायाः मैं ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को इरशाद फरमाते हुए सुनाः जिस ने अल्लाह की सन्तुष्टि के लिए हज्ज किया तथा इस ने ना अश्लीलता का कोई काम किया तथा ना अवज्ञा का अपराधी हुआ वह इस प्रकार पापों से पवित्र व शुद्ध हो कर लौटेगा इस को इस की माँ ने अभी जन्म दिया है।

(सहीह अल बुखारी, किताबुल हज्ज, हदीस संख्याः 1521)

*हज्ज किस पर फ़र्ज़ है?*

जामअ़ तिरमिज़ी में ह़दीस पाक हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबदुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमायाः एक व्यक्ति ह़ज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की पावन सेवा में उपस्थित हो कर निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! ह़ज्ज को कया चीज़ वाजिब करती है? सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः यात्रा के लिए सामान तथा सवारी।

(जामेअ़ अल तिरमिज़ी, किताबुल ह़ज्ज, ह़दीस संख्याः 818)

फिक़्हा किरामने इस की इस प्रकार विवरण किया है के जिस व्यक्ति के पास बुनियादी आवश्यकता से अधिक इस प्रकार धन हो के वह बैतुल्लाह शरीप तक आने-जाने और निवास करन का खर्चा उत्पन्न कर सकता हो तथा ह़ज्ज की यात्रा से वापिस आने तक परिवार वालों के खर्चे का प्रबन्ध कर सकता हो तो वह व्यक्ति योग्य व सामर्थ्य है तथा इस पर ह़ज्ज फर्ज़ है।

ज़कात वाजिब होने के लिए अन्य शर्तों के साथ निसाब का मालिक होना, धन का बढने वाला होना तथा निसाब पर वर्ष बीत जाना, शर्तें हैं। ह़ज्ज वाजिब होने के लिए धन के बढने या इस पर वर्ष गुज़रने की शर्त नहीं तथा ना निसाब का समापन अनिवार्य है, स्वंय बुनियादी आवश्यकता तथा परिवार के खर्चे से अधिक इतनी राशि हो के बैतुल्लाह शरीफ जाने-आने के खर्चे (लागत व व्यय) उत्पन्न कर सकता हो तो ह़ज्ज फर्ज़ हो जाता है।

रहने के लिए घर के अतिरिक्त सम्पत्ति हो तथा इस को बेचने से इतनी राशि प्राप्त होती है के वह वापसी तक परिवार के खर्चे व लागत का उत्पन्न कर के हज्ज के सम्पूर्ण लागत उत्पन्न कर सकता होतो ऐसे व्यक्ति पर हज्ज फर्ज़ है।

फतावा आलमगिरी, किताबुल मनासिक में है यह ही।

*हज्ज फ़र्ज़ होने के बावजूद विलम्ब करना- यातना के योग्य*

कुछ लोग हज्ज फर्ज़ होने के बावजूद किसी इसलामी तकलीफ के बिना पेश करते हैं। तथा यदि खज़ा आ जाए तो एक फर्ज़ के तर्क करने तथा विसाल उत्तमता से हमेशा के लिए महरूम रह जाते हैं। जामअ़ तिरमिज़ी में रिवायत हैः-

भाषांतरः- सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः जो व्यक्ति खर्चे के योग्य और ऐसी सवारी का मालिक हो जो इसे बैतुल्लाह शरीफ तक पहुंचाए तथा फिर वह हज्ज ना करे तो इस पर इस बात का विवाद नहीं के वह यहूदी मरे या नसरानी मरे। इसी से संबंधित अल्लाह तअ़ाला ने अपनी पुस्तक में आदेश फरमायाः और अल्लाह तअ़ाला के लिए लोगों पर कअ़बातुल्लाह का हज्ज फर्ज़ है जो इस तक पहुंचने की योग्यता व सामर्थ्य रखते हैं.(सुरह आले इ़मरानः 03:97)

(जामेअ़ अल तिरमिज़ी, अबवाब अल हज्ज, हदीस संख्याः 817)

जो लोग हज्ज फर्ज़ होने के बावजूद हज्ज संपादन नहीं करते इन्हें उपदेश करते हुए हज़रत शेखुल इसलाम जामिया निज़ामिया के निर्माता रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

हज्ज में कमाल दरजे की अल्लाह तआ़ला की सन्तुष्टी है क्यों के बतीबे-खातिर धन खर्च करना तथा समस्याओं व कठिनाईयों में सहनशीलता करना कठिन कार्य था इस लिए अल्लाह तआ़ला उ़म्र भर में एक ही हज्ज घोषित किया जिस से अहले इ़मान की परीक्षा लक्षय है।

बडी अफसोस की बात होगी के हम उ़म्र भर दावे इ़बादतो गुज़ार होने की करते रहें तथा सम्पूर्ण जीवन में एक परीक्षा इ़बादत गुज़ार होने की जो स्थापित किया गया है इस से भी दूर हो जाएं।

इस से तो यह साबित होगा के वह दावा ज़बानी ही ज़बानी था इसी कारण से मान्य हदीसों में वर्णन है के जो हज्ज नहीं करेगा वह यहूदी हो कर मरे या नसरानी अल्लाह तआ़ला को इस की कुछ चिन्ता नहीं।

(मखासिदुल इसलाम, भागः04, पः 56)

*हज्ज- ज़ाहिरी व बातिनी अनुग्रह का केन्द्र*

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हज्ज के इस विसाल वरदान के कारण विशेष उत्तमता व विशिष्ठा बरकात वर्णन फरमाए। कुछ लोग हज्ज फर्ज़ होने के बावजूद यह समझते हैं के हज्ज पर अधिक कार्यरत आते हैं।

धन अधिक मात्रा में खर्च करें तो शायद हम तंगी व गरीबी से दो चार हो जाएंगे। ऐसे लोगों को भी हज्ज की अनुदेश दिलाते हुए सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमाया के अल्लाह तआ़ला हज्ज की बरकत से तंगदस्ती व दरिद्रता को दूर फरमा देता है तथा पापों को भी क्षमा कर देता है।

दरिद्रता व गरीबी को दफा होना ज़ाहिरी लाभ है तथा पापों का क्षमा किया जाना बातिनी लाभ व अनुग्रह है। इस प्रकार हज्ज ज़ाहिरी व बातिनी हर दो अनुग्रह का केन्द्र व सारांश है। जैसा के जामेअ़ तिरमिज़ी, सुनन नसाई तथा सुनन इ़ब्न माजह में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- सैयदना अबदुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः तुम पय दर पय (पैदन) हज्ज व उ़मरह किया करो क्यों के हज्ज व उ़मरा दरिद्रता व पापों को ऐसे ही अन्त करते हैं जैसे भेटी लोहा तथा सोना चाँदी के मैल कुचैल को दूर कर देती है। तथा स्वीकृत हज्ज का पुण्य व सवाब तो जन्नत ही है।

(जामेअ़ तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 815, सुनन अन नसाई, हदीस संख्याः 2630, सुनन इ़ब्न माजह, हदीस संख्याः 2887)

*हज्ज के प्रकार*

हज्ज के 3 प्रकार हैः-

(1)- हज्ज खिरान।

(2)- हज्ज तमत्तु।

(3)- हज्ज इफराद।

(1)- हज्ज खिरान इस हज्ज को कहते हैं जिस में मीखात से हज्ज के महीनों में ऊ़मरा तथा हज्ज की नीयत को एक ही अहराम में जमा किया जाए।

हज्ज में ऊ़मरा करने के बाद बाल नहीं निकाले जाते बल्कि इसी प्रकार अहराम की स्थिति में रहते हैं तथा जब हज्ज केदिन शुरु (आरम्भ) होते हैं तो इसी अहराम से हज्ज करते हैं।

(2)- हज्ज तमत्तु इस हज्ज को कहते हैं जिस में मीखात से हज्ज के महीनों में ऊ़मरह की नीयत से अहराम बाँधा जाए तथा मनासिक ऊ़मरा संपादन करने के बाद अहराम खुल जाता है फिर जब हज्ज के दिन शुरु होते हैं इस समय दोबारा हज्ज का अहराम बाँध कर हज्ज किया जाता है।

अधिकतर लोग हज्ज तमत्तु ही किया करते है।

(3)- हज्ज इफरात इस हज्ज को कहते हैं जिस में केवल हज्ज की नीयत से अहराम बाँधा जाए तथा इस हज्ज में मनासिक संपादन करने के बाद अहराम खोल दिया जाता है।

*हज्ज के महीनें*

हज्ज का फरीज़ा ज़बान व मकान के साथ विऱेष है, यथा इस फरीज़े को विशेष स्थान व विशेष समय पर संपादन किया जाता है। शव्वाल, ज़िल खअ़दा तथा ज़िल हज्जा के प्रारंभ के 10 दिस हज्ज के महीने कहलाते हैं।

सहीह बुखारी शरीफ में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबदुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने फरमायाः हज्ज के महीनेः शव्वाल, ज़िल खअ़दा तथा ज़िल हज्जा के शुरु के 10 दिन हैं।

(सहीह बुखारी, किताबुल हज्ज)

हज्ज के दिनः हज्ज के 6 दिन हैं-

8/9/10/11/12 और 13 ज़िल हज्जा।

*हज्ज के फराइ़ज़*

हज्ज के फराइज़ 3 हैः-

(1)- अहराम।

(2)- वुखूफ अ़रफात।

(3)- तवाफ ज़ियारत।

(1)- *अहरामः* इस से मुराद दिल से हज्ज की नीयत करना तथा तलबिय (लब्बैक) कहना है।

(2)- *वुखूफ अ़रफातः* 9 ज़िल हिज्जा को सूर्योदय के बाद से 10 ज़िल्ल हिज्जा के सुबह सवेरे के बीच मैदान अ़रफात में कुछ देर के लिए क्यों ना हो ठहरना या वुखूफ, हज्ज का विशाल स्तम्भ है। सूर्यास्त के तुरंत बाद वुखूफ का आरंभ करना, श्रेष्ठ है।

(3)- *तवाफ ज़ियारतः* 10 ज़िल हिज्जा के सवेरे से 12 ज़िल हिज्जा के दिन, सूर्योदय होने से पूर्व तक किसी भी समय बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ करना।

इन तीनों अरकान को तरतीब के साथ समापन करना तथा हर स्तम्भ को इस के विशेष स्थान तथा निर्धारित समय में संपादन करना भी अवश्य है इन तीनों फराइज़ में से यदि कोई चीज़ छूट जाए तो हज्ज नहीं होगा तथा इस की तलाफी (क्षतिपूर्ति) क़ुर्बानी आदि से भी नहीं हो सकती।

*हज्ज के वाजिबात*

हज्जे के वाजिबात (अनिवार्य) 6 हैः-

(1)- *वुखूफ मुज़दलिफाः* 10 ज़िल हिज्जा को सुबह सवेरे के बाद मुज़दलिफा में वुखूफ करना, इस का अंतिम समय सूर्योस्त से पूर्व तक है।

(2)- सफा मरवह के बीच सई़ करना।

(3)- *रमी जमारः* गुरूवार को कंकडियां मारना।

(4)- हज्ज खिरान तथा हज्ज तमत्तु करने वालों के लिए क़ुर्बानी करना।

(5)- *हलखः* सर के बाद मुण्डवाना या *खसरः* बाल कतरवाना।

(6)- *आफाखी* (मीखात से बाहर रहने वाले) के अधिकार में मक्के से वापसी के अवसर पर तवाफ विदाअ करना।

टिप्पणीः- इन वाजिबात में से यदि कोई वाजिब छूट जाए चाहे जानबूझकर या भूले से किया हो तो एक दम यथा एक बकरा क़ुर्बानी करना वाजिब (अनिवार्य) है।

*हज्ज के संपादन के लिए अ़रफा, मुज़दलिफा व मिना निर्धारित करने के कारण*

हज्ज के समापन के लिए मिना मुज़दलिफा तथा अ़रफात आदि स्थान निर्धारित करने की हिकमत वर्णन करते हुए हज़रत शेखुल इसलाम, जामिया निज़ामिया के निर्माता रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

मोमिनों के मुकिया हज़रत अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से किसी ने पूछा के इस का कया कारण है के हज्ज के दिन लोग इस पर्वत के के पास (यथा अ़रफात में) खडे होते हैं जो हरम की सीमा से बाहर है तथा हरम में नहीं खडे होते?

कहा इस लिए के कअ़बा बैतुल्लाह है तथा हरम बाबुल्लाह जब बन्दे अपने खुदा के दरबार में उपस्थित होते हैं तो वह प्रथम दरवाज़े के बाहर खडे किए जाते हैंताकि अत्यन्त विनम्रता व विनती करें फिर इस ने पूछा के इस का कया कारण है के मशअ़र हराम के पास भी वुखूफ होता है?

www.Ziaislamic.com

कहा जब भीतर आने की इन्हें आज्ञा हुई तो वह भीतर तो आ गए किन्तु फिर दूसरे परदे के पास यथा मुज़दलिफा में रोके जाते हैं ताकि फिर वहाँ विनम्रता व विनती कें तथा इस के बाद क़ुर्बानी करनेकी आज्ञा होती है। जो अल्लाह के नज़दीकी का माध्यम है।

तथा वहाँ सम्पूर्ण पापों तेथा मैल कुचैल से पवित्र व शुद्ध हो कर हजामत आदि बनवाकर तहारत के साथ ज़ियारत करने की आज्ञा होती है (इसी कारण से इस तवाफ का नाम तवाफुल ज़ियारह है) फिर इस ने पूछा तशरीख के दिन में रोज़े क्यों मना किए गएं?

कहाः इस लिए के उन दिनों लोग अल्लाह तआला की महमानी में होते हैं तथा महमान बिना मेज़बान की आज्ञा के रोज़ा नहीं रख सकता फिर इस ने पूछा के कअ़बा शरीफ का परदा पकडने का कया कारण है?

फरमायाः वह ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति का दोष (खसूर) करता है तथा जब इस से मुलाकात होती है तो इस अपराध की क्षमा के लिए इस का दामन पकड़ कर क्षमा चाहता है।

(मखासिदुल इसलाम, भागः04, पः 59/60)

*हज्ज को जाने वालों के हज़रत अबुल बरकात रहमतुल्लाहि अलैह की निर्देशन*

हज़रत अबुल बरकात सैय्यद खलील उल्लाह शाह नक्षबंदी मुजद्दिदी खादरी रहमतुल्लाहि अलैह हज्ज को जाने वालों को निर्देश करते हुए लिखते हैः-

यहाँ मैं इन कार्य का वर्णन कर देना अवस्य समझा हुँ जिन को हज़रत के पिता रहमतुल्लाहि अलैह हज्ज के जाने वालों को किया करते थे, ताकि यह लोग इन बातोंका अनुसार रख कर अपनी यात्रा को सफल बनाएं।

प्रथम बात बडे प्रबन्ध से युं फरमातेः देखो! यह हज्ज की यात्रा बड़ी सहनशीलता व कठिनाई वाली होती है। इस में ऐसे अवसर भी आते हैं के जब लोग एक दूसरे से झगड़ते हैंतथा अपने विश्राम को मान्य करने के लिए आपसमें झगड़ने तथा विवाद करने लगते हैं।

सावधान! ऐसे अवसर पर धीरज व सहनशीलता को हाथ से जानेना देना, बात कितनी ही असहमति व अप्रिय क्यों ना हो, भूल जाने से काम लेना तथा अल्लाह तआ़ला के इस आदेश को भी ना भूलनाः

भाषांतरः- सावधान! हज्ज के बीच लड़ाई-झगड़ा, अवज्ञा व गाली-गलोच ना होने पाय, इस धैर्य का बडा पुण्य व सवाब है।

दूसरी बात यह अनुदेश फरमाते हैं के देखो कुछ इ़बादतें स्थान के साथ विशेष होती हैं, जो दूसरे पर स्थान नहीं हो सकतीं, इस लिए कोशिश करो के जब तक तुम्हारा मक्के में निवास रहे बैतुल्लाह शरीफ का अधिक से अधिक तवाफ होता रहे के यह वरदान विश्व में किसी और स्थान भाग्य नहीं हो सकता।

इसी प्रकार उ़मरा भी विशेष इ़बादत है, जो मक्के ही में उपलब्ध आती है। इस लिए जितने हो सकें अपने और अपने माता-पिता और प्रिय व निकट वालों कि ओर से नफ्ल उ़मरे संपादन करो।

तथा इस को भी अच्छी तरह याद रखो के यहाँ की एक नेकी एक लाख नेकियों के बराबर है, किन्तु साथ ही इस को भी ना भुलाना के यहाँ पापों पर भी वैसी कठिन पकड़ है।

तीसरी बात ज़मज़म शरीफ के संबंधित यह संकेत करते थे के यह एक ऐसी नअ़मत है जो वह जिस में स्वाद व लज़्ज़त भी हो तथा भलाई भी) के उद्देश्य है। इस की विशिष्ठा यह है के इस को जिस नीयत से पियो वह पूरी होती है।

यह रोग व बीमारियों के लिए शिफा व उपचार भी है तथा दअ़ा की स्वीकृत का माध्यम भी है तथा भूके के लिए संपोषण भी, इस लिए जब तक यहाँ निवास रहे ज़मज़म शरीफ खूब पियों तथा इस के वसीले से दुअ़ा किया करो।

यहाँ के औराद के संबंध से हज़रत क़िबला रहमतुल्लाहि अलैह यह संकेत करते हैं के "हज़ब आ़ज़म" दुआ़ओं का ऐसा सारांश है जिस में सारी श्रेष्ठ व मसनून दुआएं जमा हैं। इस लिए कम से कम इस का एक समाप्ति यहाँ हो जाए तो बहुत अचछा है।

(किताबुल हज्ज व ज़ियारह, पेश लफ्ज़, पः 3-4)

ज़ियारत रौज़े अतहर के शिष्ठाचार व सभ्याचार के बारे में हज़रत रहमतुल्लाहि अलैह की अनमोल नसीहतें ज़ियारत रौज़े अतहर के विषय में पः 66 पर वर्णन की गई है।

*कअ़बे का तवाफ - समुदाय के लिए विशेष कृपा*

युं तो हर दौर में तवाफ करने वाले कअ़बे का तवाफ करते रहे किन्तु सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम की समुदाय को अल्लाह तअ़ाला ने तवाफ की विशेष कृपा प्रदान की। जैसा के इ़माम तबरानी की मुअ़जम औसत में रिवायत हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत जाबेर बिन अ़बदुल्लाह रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के ह़ज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः इस ज़ात का वचन जिस के वश में मेरी जान है! अवश्य कअ़बे को ज़बान और दो होंट हैं। और इस ने अल्लाह तअ़ाला के दरबार में शिकायत की, इस ने निवेदन कियाः ऐ पालनहार! मेरे पास आने वाले तथा ज़ियारत करने वाले कम हो गए, तो अल्लाह तअ़ाला ने इस की ओर वही फरमाई, निस्संदेह मैं ऐसे मनुष्यों को जीवन दान करने वाला हुं जिन के दिल खौफ व भय से भरे हुए तथा इन के माथे अल्लाह के दराबर में सजदे करते हैं, वह तेरी ओर ऐसे मुशताख रहेंगे जैसे कबूतर अपने अण्डे की ओर मुशताख रहता है।

(अल मुअ़जम अल औसत लिल तबरानी, ह़दीस संख्याः 6245)

*ह़ाजियों की शफाअ़त – सरकार के दरबार में कअ़बे की विनती*

अल्लाह तअ़ाला ने सरकार पाक सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को सारी कायनात के अधिकार में शफाअ़त करने वाला) बना कर भेजा, आप की शफाअ़त से सम्पूर्ण इ़मानवाले आभूषण होंगे।

तथा हाजियों व ज़ायरीन (ज़ियारत करने वाले) के अधिकार में आप ने विशेष दुआएं कीं। शफाअ़त (अनुनय) विशिष्ट का वादा भी फरमाया तथा आप के नाते ही से कअ़बा हाजियों के अधिकार में अल्लाह तआ़ला के दरबार में सिफारिश करेगा।

स्वंय हाजियों की ही नहं बल्कि वह लोग जो अपने दिलों में ह़ज्ज की इच्छा व कामना रखा करते थे, परन्तु दरिद्रता या किसी इसलामी तकलीफ की बिना ह़ज्ज ना कर सके हों तो कअ़बा इन के अधिकार में भी सिफारिश करेगा जैसा के नुज़हतुल मजालिस में हैः-

भाषांतरः- शर्फुल मुसतफा नामी एक पुस्तक में वर्णन हैः अवश्य कअ़बातुल्लाह अपने पालनहान के दरबार में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के रौज़े अतहर की ज़ियारत के लिए आज्ञा की इच्छा करे तो अल्लाह तआ़ला इसे आज्ञा प्रदान करेगा। वह सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के दरबार में निवेदन करेगाः ऐ नबी करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! 3 लोग के बारे में आप चिन्ता ना करें! मैं इन के अधिकार में सिफारिश करुँगाः

(1)- वह व्यक्ति जिस ने मेरा तवाफ किया।

(2)- वह व्यक्ति जो (ह़ज्ज या उ़मरा के उद्देश्य से) निकला किन्तु मुझ तक ना पहुंचा सका और

(3)- वह व्यक्ति जो मुझ तक पहुंचने की इच्छा किया परन्तु सामर्थ्य व योग्यता ना रखा।

(नुज़हतुल मजालिस व मुंतक़ब अल नफाइस, बाब फज़्लुल हज्ज)

इसी लिए हर मोमिन बन्दा चाहे धनवान हो या गरीब इस की दिली इच्छा यह होती है के इस के जीवन भर में कम से कम (न्यूनातिन्यून) एक बार बैतुल्लाह व ज़ियारत की कृपा से आभूषण हों. इसी लिए सारे संसार से अल्लाह तआ़ला के बन्दे पावन मक्का व प्रिय मदीने में उपस्थित होते हैं।

*हाजी- अल्लाह के मेहमान*

हाजियों (और उ़मरा करने वाले) को यह विशेषता प्रदान की है के वह जो प्रार्थना व दुआ़ करते हैं अल्लाह तआ़ला इसे स्वीकार करता है। इन्हें अल्लाह तआ़ला के मेहमान (अतिथि) होने की कृपा मिलती है। सुनन इ़ब्न माजह में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से वर्णित करते हैं के आप ने आदेश फरमायाः हज्ज तथा उ़मरा करने वाले अल्लाह तआ़ला के मेहमान हैं, यदि वह अल्लाह तआ़ला से कोई दुआ़ मांगते हैं तो वह स्वीकार करता है तथा यदि वह मुक्ति व मोक्ष चाहता है तो अल्लाह तआ़ला इन को प्रदान करता है।

(सुनन इ़ब्न माजह, हदीस संख्याः 3004)

*हज्ज की यात्रा में हर क़दम पर नेकी*

जब हाजी लोग के पेश नज़र यह बात रहेगी के हम अल्लाह तआ़ला के मेहमान हैं तथा इस के दरबार में उपस्थित हैं तो इन की ज़बान पर कभी शिकायत के शब्द नहीं आएगा तथा ज़ाहिरी रूप से कठिनाई तथा परेशानी भी पेश आ जाए तो धीरज व सहनशीलता करेंगे तथा दिल में यह विश्वास रहेगा के जिस पवित्र पालनहार के दरबार में हम आए हैं वही हमारी सुरक्षा फरमाएगा तथा हर कठिनाई को राहत में रूपान्तर फरमाएगा तथा करम का यह मामला होता है के हाजी लोग को हर क़दम पर नेकियां दान की जाती हैं जैसा के शुअ़बुल इ़मान में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फरमाते हैः- मैं ने हज़रत अबुल खासिम सैयदना रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः

जो व्यक्ति बैतुल्लाह शरीफ के उद्देश्य से आए तथा अपने ऊँट पर सवार होतो ऊँट जो क़दम उठाता तथा रखता है अल्लाह तआ़ला इस के हर क़दम के बदले नेकी लिखता है तथा हर क़दम के बदले दोष व अपराध क्षमा करता है तथा हर क़दम के बदले दर्जे बुलंद फरमाता है, यहाँ तक के जब वह बैतुल्लाह शरीफ को पहुंचता है तथा तवाप की कृपा से आभूषण होता है तथा सफा व मरवह के बीच सई़ करता है फिर हलख या खसर करता है तो वह अपने पापों से इस दिन की ओर पवित्र व शुद्ध हो कर निकलता है जिस दन के इस की माँ ने इसे जन्म दिया था।

(शुअ़बुल इ़मान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 3959)

*स्वीकृत हज्ज का बदला जन्नत !*

जब बन्दा हज्ज संपादन कर के वापस होता है तो इस स्थिति में वापिस होता है के इस के शरीर पर पाप बाखी नहीं रहता, स्वीकृत हज्ज के बदले से जन्नत प्रदान की जाती है, जैसा के सहीह बुखारी तथा सहीह मुस्लिम में रिवायत हैः-

भाषांतरः- हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः एक उ़मरा दूसरे उ़मरे तक बीच के पापों का कफ्फारह (क्षतिपूर्ति व पारितोषिक) है तथा स्वीकृत हज्ज का बदला स्वंय जन्नत है।

(सहीह अल बुखारी, हदीस संख्याः 1773, सहीह मुस्लिम, हदीस संख्याः 3355)

जब पैगम्बरों के इ़माम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने हाजी लोग के अधिकार में दुआ़ की है तो इस प्रशंसनीय दुआ़ का यह प्रभाव होता है के इस से केवल हाजी लोग ही प्रफुल्लित व अभिमन्त्रित नहीं होते बल्कि अब वह जिस के अधिकार में सिफारिश करते हैं अल्लाह तआ़ला इसे स्वीकार करता है।

जैसा के मुसनद बज़्ज़ार, जामअ़ अल हादीस, जामअ़ कबीर, मजमअ़ उ़ज जवाईद तथा कंज़ुल उ़म्माल में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः- सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः ह़ज्ज करने वाला अपने 400 परिवार, (रावी कहते हैः या सरकार सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमायाः) परिवार के 400 लोगों की शफाअ़त (अनुनय) करेगा।

(मुसनद अल बज़्ज़ार, मुसनद ह़ुज़ैफा बिन अल यमान रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु, ह़दीस संख्याः 3196 / अल जामअ़ अल कबीर लिल सुयूती, ह़दीस संख्याः 12137 / जामअ़ अल हादीस, ह़दीस संख्याः 11680 / मजमअ़ उज़ ज़वाईद, काबुतल ह़ज्ज, ह़दीस संख्याः 5289 / कंज़ुल उ़म्माल किताबुल ह़ज्ज व अल उ़मरह, ह़दीस संख्याः 11841)

शरह अन निसह, मिश्कातुल मसाबीह तथा ज़ुजाजातुल मसाबीह में ह़दीस पाक हैः-

भाषांतरः- ह़ज़रत जाबिर बिन अ़बदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के अल्लाह के पैग़म्बर सल्ललल्लाहु तआ़ला अलैहि सल्लम ने आदेश फरमायाः जब अ़रफे का दिन होता है तो अल्लाह तआ़ला संसार के आकाश पर प्रकट होता है तथा फरिश्तों के सामने अ़रफात के मैदान में जमा होने वालों पर फ़ख़र (गर्व) करता है तथा आदेश फरमाता हैः ऐ फरिश्तो! तुम मेरे बन्दों को देखो के वह मेरे दरबार में मैले बाल गर्द से भरे चहरों में दूर तथा बड़े विसाल रास्तों से चल कर यहाँ उपस्थित हैं तथा तसबीह व तहलील ज़िक्र व तलबिय करते हुए मुझे पुकार रहे हैं। ऐ फरिश्तो! तुम गवाह रहो मैं ने इन सब को बख्श दिया, यह सुन कर फरिश्ते निवेदन करते हैः पालनहार! इन में फलां पुरुष तथा फलां महिला भी है जो पापी तथा मोहतम है।

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फरमाया के यह सुन कर अल्लाह तआ़ला आदेश कहेगाः सुनो! मैं ने (नेकों के साथ) इन को भी बख्श दिया यह फरमा कर हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः किसी और दिन नरक (दोज़ख) से इतने बन्दों को रिहाई नही मिलती जितने बन्दों को अ़रफे के दिन नरक से रिहाई मिलती है।

(शरह अन निसा, मिश्कातुल मसाबीह, हदीस संख्याः 2601 / ज़ुजाजातुल मसाबीह, हदीस संख्याः 105)

यहाँ किताब व सुन्नत के आधार में हज्ज की फरज़ीयत महत्व तथा इस की प्रतिष्ठा व उत्तमता वर्णन किए गए हैं, ताकि हमारे दिलों में हज्ज के संपादन की भावना उजागर हो।

अल्लाह तआ़ला के दरबार में दुआ है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के वसीले से हमें हज्ज की कृपा तथा रौज़े अतहर की ज़ियारत की कृपा से आभूषण फरमाएं।

आमीन।

www.Ziaislamic.com